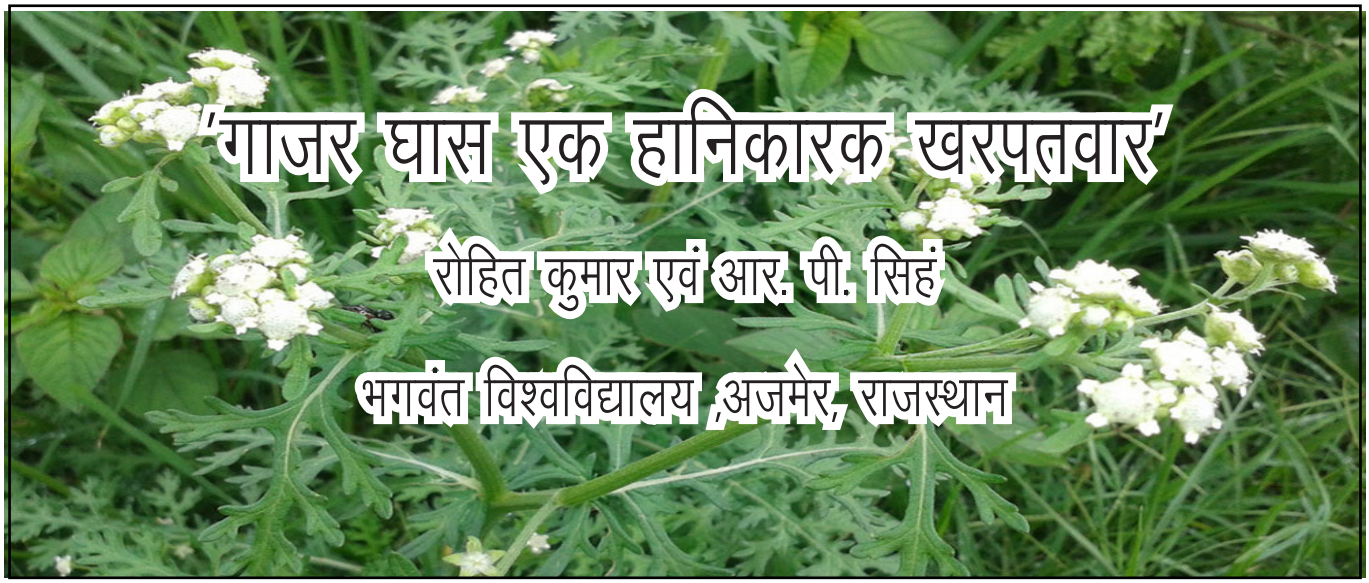

'गाजर घास एक हानिकारक खरपतवार'

रोहित कुमार एवं आर. पी. सिहं
भगवंत विश्वविद्यालय ,अजमेर, राजस्थान

हमारी प्रकृति में विभिन्न विभिन्न प्रकार के महत्वपूर्ण एवं लाभकारी तथा हानिकारक वनस्पतियां उपलब्ध हैं लाभकारी वनस्पतियां मानव जीवन के जनजीवन में लाभ पहुंचाती हैं तथा जो हानिकारक हैं वह मानव जीवन व पेड़ पौधों को नुकसान पहुंचाती है कुछ वनस्पतियां मानव एव प्रकृति के लिए अभिशाप का रूप धारण करती जा रही है।

भारत में बरसात के मौसम में बहुताए मात्रा में हानिकारक व लाभकारी वनस्पतियां उगने लगती हैं जिसमें से आज हम एक हानिकारक वनस्पति गाजर घास/कांग्रेस घास के बारे में बात करने वाले हैं कांग्रेस घास भारत के साथ–साथ विश्व के लगभग सभी देशों में बहुताएं मात्रा में फैलती जा रही है यह हानिकारक खरपतवार 10 सर्वाधिक हानिकारक पौधों की सूची में आता है

गाजर घास एक प्रकार की हानिकारक खरपतवार है जिसका बोटैनिकल नाम पार्टेनियम हिस्टोरोफोरस है

यह खरपतव ऐस्टरेसिए कुल से है इसकी पत्तियां देखने में गाजर की तरह होती हैं इसीलिए इसे गाजर घास कहते हैं इसको हम अन्य नामों से भी जानते हैं जैसे कैरेट घास कांग्रेस घास तथा लोकल क्षेत्रीय भाषा में इसको हम चटक चांदनी इतिहास नामों से भी जानते हैं यह प्रायः 1 वर्षीय पौधा होता है

गाजर घास पौधे की लंबाई लगभग 1.5 से 2 मीटर तक होती है गाजर घास को वातावरण का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है यह हर तरह के वातावरण में आसानी से उग जाती है परंतु जहां पर नमी ज्यादा होती है वहां पर तीव्रता के साथ बढ़ती है इससे मानव और जानव. रों के स्वास्थ्य एवं फसलों के लिए अत्यधिक हानिकारक साबित होती है

गाजर घास का सर्वप्रथम अमेरिका में अत्यधिक मात्रा में पाई गई थी अगर हम भारत की बात करें तो इस खरपतवार का कृषि मंत्रालय व भारतीय वन संरक्षण संस्थान के अनुसार भारत में 1950 से पहले तक इसका नामोनिशान नहीं था ऐसा कहा वह माना जाता है कि अमेरिकी शंकर गेहूं पीएल 480 के साथ या भारत में सर्वप्रथम प्रवेश की थी।

इस खरपतवार को सर्वप्रथम पुणे (महाराष्ट्र) प्रदेश में देखा गया था परंतु 2021 की बात करें तो गाजर घास भारत के लगभग हर हिस्से में पूरी तरीके से अपना अस्तित्व जमा चुकी है यह सर्वाधिक भारत के कुछ राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा जैसे अत्यधिक कृषि उत्पादक राज्यों में बहुताएं मात्रा में फैल चुकी है गाजर घास को केरल, कश्मीर तथा राजस्थान के कुछ हिस्सों में भी देखा गया है

गाजर घास मानव शरीर एवं पशुओं में नुकसान' –

गाजर घास मुख्यता फसलों को ही नहीं बल्कि मानव जीवन को भी अत्यधिक नुकसान पहुंचाती है गाजर घास में पाए जाने वाले पदार्थ (पार्थीनियम) के संपर्क में आने से मनुष्य को बुखार, दमा, एलर्जी, एलजाइमा जैसी गंभीर बीमारियां हो जाती है, एवं मनुष्य शरीर के साथ–साथ या जानवरों के लिए बहुत अधिक हानिकारक एवं विषाक्त होती है अगर हम पशुओं की बात करें तो इसको ज्यादा मात्रा में पशुओं को सेवन करवाने से पशुओं के दूध में कड़वापन आ जाता है।तथा दूध का स्वाद पीने पर कड़वा लगे लगता है।

गाजर घास से पर्यावरण के असंत. लुन का बढ़ता खतरा–'

गाजर के पौधे के समान दिखने वाली गाजर घास के पौधे की लंबाई लगभग डेढ़ से ढाई मीटर तक तथा इसकी पत्तियों कटी हुई तथा दिखने में बड़ी होती है,गाजर घास के फूल सफेद व छोटे–छोटे सफेद रंग के होते हैं इसके बीज जब पूरी तरीके से परिपक्व हो जाते हैं तो वह खुद जमीन पर गिर कर उग जाते हैं तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में उग कर उस जगह को पूरी तरीके से ढक लेते हैं गाजर घास के पौधे कम प्रकाश की आवश्यकता होती हैं इसमें प्रजनन क्षमता अधिक होने के कारण यह बहुत जल्दी से उगते एवं बढ़ते हैं इसीलिए या जिस जगह पर उगते हैं उसके आसपास किसी अन्य पौधे की वृद्धि को रूम पे ते हैं या अन्य पौधों की बढ़वार को रोक देते हैं, जिसके कारण अन्य जड़ी बूटियां व लाभकारी पौधों को भी तथा फसल को नष्ट कर देते हैं,

इसके परागकण वायु को भी बहुतायत मात्रा में दूषित करते हैं गाजर घास के जड़ों से स्रावित रसायनिक पदार्थ 'इक्वेडोर' पृथ्वी की मिट्टी को दूषित करके मिट्टी को अनुपजाऊ बनाता है तथा उस स्थान पर जहां गाजर घास लगी होती है वहां के आसपास को भी हानि पहुंचती है

गाजर घास नियंत्रण के उपाय–'

गाजर घास की रोकथाम के लिए हमें सर्वप्रथम सतर्कता बरतनी चाहिए हमें यह जहां पर भी दिखे इस को जड़ से उखाड़ कर आग से जला देना चाहिए इससे शायद कुछ हद तक छुटकारा पाया जा सकता है इस को काटते समय इस बात का विशेष ध्यान दें कि पौधों को काटते समय या रखते समय बहुत तेजी के साथ ना हिलाएं क्योंकि उसमें जो बीज लगे हुए हैं वह दूर–दूर तक फैल जाएंगे और वह मिट्टी में दबकर पुन: अनुकूल परिस्थितियों में जम जाएंगे।

कैसिया सिरिसिया नामक पौधे से भी हम गाजर घास का नियंत्रण कर सकते हैं

एक शोध के अनुसार कैसिया सिरिसिया के बीज को वहां पर बोया जाता है जहां पर गाजर घास अत्यधिक प्रभावशाली होता है कैसिया सिरिसिया के पौधे गाजर घास को 85– 90 % तक खत्म करने में प्रभावी साबित होते हैं।

अन्य उपायों में देखें तो गेंदा, जंगली चौलाई जैसे पौधों को रोपड़ से गाजर घास का प्रसारण कम किया जा सकता है

गाजर घास का उन्मूलन क्यों जरूरी है–

गाजर घास के पौधों की पत्ती के स्पर्श के कारण मनुष्य तथा जानवरों में कई प्रभावी रोग उत्पन्न हो जाते हैं इससे रोग एलर्जी दमा फफोले आदि पड़ जाते हैं, दुधारू पशुओं में त्वचा पर धब्बे ,बदबूदार दूध, एवं पशुओं के थन खराब होने के नुकसान भी इसके कारण हो जाता है यह दाल वाले फसलों की जड़ों में 50 से 60 : तक गाठे खत्म कर देता है इसीलिए हमें अपने पर्यावरण एवं दलहनी फसलों को बचाने के लिए इसके पौधे को फूल आने से पहले ही जहां कहीं भी दिखे उखाड़ कर आग में जला देना चाहिए।